हस्तरेखा पढ़ने वाली: अगली कड़ी II

Gillette Audio — नंदो द स्क्राइब — gillettenarrative.com

मैंने मियामी लौटने की योजना बना ली थी।

छह महीने।

आराम करने, अपनी स्पेनिश को धार देने, और क्यूबाई औरतों को क़रीब से पढ़ने के लिए काफ़ी वक़्त।

वे हमेशा से मेरा पसंदीदा शिकार रही थीं।

मैं एक सुपरमार्केट में घुसा, और नियति ट्रॉली से पहले वहाँ पहुँच गई।

मेरे सामने एक औरत प्रकट हुई।

क्यूबाई।

मैंने उसे तुरंत पहचान लिया।

उसने मुझे पहचान लिया।

वह कुछ सेकंड मुझे घूरती रही।

फिर बोली:

“तुम आख़िर यहाँ कर क्या रहे हो?”

“राशन ख़रीद रहा हूँ।”

“नहीं। मेरा मतलब है, धरती पर। अब तक तो तुम्हें नरक में होना चाहिए था।”

मैंने उसकी अंग्रेज़ी की तारीफ़ की।

बेदाग़।

सबसे बेहतरीन औरतें हमेशा एक साथ दो लोग होने में कामयाब रहती हैं:

जानकारी चाहिए हो तो मीठी,

मिल जाए तो निर्मम।

उसने पूछा मैं कैसा हूँ।

मेरी सेहत कैसी है।

मैं ज़िंदा भी कैसे हूँ।

मेरी पत्नी कहाँ है।

और सबसे बढ़कर:

“तुमने जवान बने रहने और ख़ुद शैतान को हरा देने का इंतज़ाम कैसे कर लिया?”

मैंने कहा कि मुझे एक बस पकड़नी है।

वह हिस्सा सच था।

मैंने यह नहीं बताया कि कहाँ की।

मैंने विदा ली और ग़ायब हो गया।

घर लौटकर मैं तुरंत सो गया।

सपने में मैंने किसी को इटली वाले अपने घर की सीढ़ियाँ चढ़ते देखा।

मैं उसे जानता था।

या शायद नहीं जानता था।

फिर बात मेरी समझ में आई।

वह वही था।

सिनसिनाटी वाला भारतीय।

दस्तख़त किए हुए डॉलर के नोट वाला।

वह सबसे ऊपर की सीढ़ी तक पहुँचा।

मुझे गले लगाया।

उसी ब्रिटिश आत्मविश्वास के साथ मुस्कुराया, जिसे कुछ भारतीय अंग्रेज़ों से कहीं बेहतर पहनते हैं।

फिर उसने मुझे संजीदगी से देखा।

“फ्रेगा, प्लीज़ — बाथरूम कहाँ है?”

मैं हड़बड़ाकर जागा।

बाथरूम का दरवाज़ा खोजने चला।

फिर समझ आया कि मैं अब भी सपने के भीतर ही हूँ।

मैं मुड़ा।

लाल आरामकुर्सी पर कोई बैठा था।

फिर वही।

बोस्टन का भूत।

हँसता हुआ।

“मुझे पता था तुम डरे नहीं थे। तुम जिगरवाले मर्द हो।”

फिर उसने अपने बगल में किसी की ओर इशारा किया।

“देखो मैं किसे लाया हूँ।”

एक लंबी औरत।

शालीन।

अमेरिकी।

क़रीब चालीस की।

किसी बड़े अफ़सर की देहभंगिमा।

उस इंसान की नज़र जो दूसरों की ज़िंदगियाँ ख़त्म कर देने वाले काग़ज़ों पर दस्तख़त करता है।

उसने हाथ बढ़ाया।

“कॉपीराइट ऑफ़िस। वॉशिंगटन डी.सी.।”

मैंने सिर हिलाया।

“ज़बरदस्त तरक़्क़ी। तुम यहाँ कैसे आ पहुँचीं?”

“मुझे तुम्हारा एक ईमेल मिला था।”

“और फिर?”

“मैंने उसे पढ़ा।”

“और फिर?”

“मेरा दिल बर्दाश्त नहीं कर पाया।”

भूत ठहाका मारकर हँस पड़ा।

मैं नहीं हँसा।

“मुझे अफ़सोस है।”

“अफ़सोस मत करो।”

“नहीं, सच में।”

“नहीं, सच में — मुझे भी।”

वह बैठ गई।

कमरे को परखा।

मुझे परखा।

फिर बोली:

“तुम वही आदमी हो जिसका मैं ज़िंदगी भर इंतज़ार करती रही।”

“किसी से मिलने के लिए यह तो काफ़ी पेचीदा तरीक़ा लगता है।”

“मुझे इससे बेहतर कुछ नहीं मिला।”

“नहीं। मेरा यक़ीन करो। यह सबसे बेहतर नहीं था।”

वह एक पल के लिए चुप हो गई।

फिर मैंने उससे वह अकेला सवाल पूछा जो मायने रखता था।

“कॉपीराइट ऑफ़िस से पहले — तुम कहाँ काम करती थीं?”

“एक अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी में। डिटर्जेंट।”

“कैसा था?”

“लक्ष्य पूरे करने के लिए तुम्हें मरना पड़ता है।”

“मतलब?”

“अक्षरशः। वे तुमसे तब तक काम कराते हैं जब तक तुम फट न जाओ।”

मैं चुप रहा।

फिर मैं मुस्कुराया।

“मुझे अफ़सोस है, जान।”

“किस बात का?”

“तुमने ग़लत आयाम चुन लिया।”

“जी?”

“ज़िंदगी में यह हमेशा — सिर्फ़ और सिर्फ़ — अंदाज़ का मामला होता है।”

मैंने खिड़की की ओर इशारा किया।

धरती अब भी वहीं बाहर थी।

भ्रमित।

शोर से भरी।

समस्याओं से भरी।

“मैं सबकी सुनता हूँ।”

“भूतों की भी?”

“ख़ासकर उन्हीं की।”

“तो तुम हमारे साथ क्यों नहीं चलते?”

“क्योंकि यहाँ नीचे मुझे अभी कुछ पूरा करना बाक़ी है।”

बोस्टन के भूत ने सिर हिलाया।

उस अफ़सर औरत ने नज़रें झुका लीं।

वह निराश दिखी।

मैं उठ खड़ा हुआ।

दरवाज़े तक गया।

फिर मुड़ा।

“एक बात और —”

“क्या?”

“संयोग से, मैं भी डिटर्जेंट के धंधे में हूँ।”

“तो?”

“पर अपने लक्ष्य पूरे करने के लिए मैं किसी के मरने का इंतज़ार नहीं करता।”

भूत हँसी से लोटपोट हो गया।

वह मुस्कुराई — पहली बार।

जब मैंने दोबारा आँखें खोलीं, मैं अकेला था।

कमरे में कोई नहीं बचा था।

कोई भूत नहीं।

कोई अफ़सर नहीं।

बाथरूम खोजता कोई भारतीय नहीं।

सिर्फ़ लाल आरामकुर्सी।

अब भी मुझे देखती हुई।

जैसे उसे पहले से पता हो कि अगली रात कौन आने वाला है।

फेर्दिनान्दो

© 2026 Ferdinando Frega — सर्वाधिकार सुरक्षित
Gillette Audio — संयुक्त राज्य अमेरिका में कॉपीराइट पंजीकरण प्रक्रियाधीन